अध्याय 5: उषा (शमशेर बहादुर सिंह) - महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

भाग 1: बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs)

1. 'उषा' कविता के रचयिता कौन हैं?
    - (क) रघुवीर सहाय
    - (ख) शमशेर बहादुर सिंह
    - (ग) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
    - (घ) सुमित्रानंदन पंत
    - उत्तर: (ख) शमशेर बहादुर सिंह
2. कवि ने प्रातःकालीन आकाश की तुलना किससे की है?
    - (क) नीले कमल से
    - (ख) नीले शंख से
    - (ग) नीले सागर से
    - (घ) नीले दर्पण से
    - उत्तर: (ख) नीले शंख से
3. 'राख से लीपा हुआ चौका' किस स्थिति को दर्शाता है?
    - (क) शाम की बेला को
    - (ख) रात के अंधेरे को
    - (ग) भोर की पवित्रता और ताजगी को
    - (घ) दोपहर की गर्मी को
    - उत्तर: (ग) भोर की पवित्रता और ताजगी को
4. चौके के 'गीला' होने का क्या अर्थ है?
    - (क) बारिश हुई है
    - (ख) ओस के कारण नमी है

- (ग) सफाई की गई है
- (घ) अभी सुबह हुई है
- उत्तर: (ख) ओस के कारण नमी है (ताजगी का प्रतीक)

5. कवि ने काली सिल पर क्या मलने की बात कही है?
   - (क) चंदन
   - (ख) लाल केसर
   - (ग) पानी
   - (घ) मिट्टी
   - उत्तर: (ख) लाल केसर
6. आकाश रूपी स्लेट पर किसके मलने की कल्पना की गई है?
   - (क) काली स्याही
   - (ख) सफेद चॉक
   - (ग) लाल खड़िया चॉक
   - (घ) नीला रंग
   - उत्तर: (ग) लाल खड़िया चॉक
7. उषा का 'जादू' कब टूटता है?
   - (क) चाँद निकलने पर
   - (ख) बादल आने पर
   - (ग) सूर्योदय होने पर
   - (घ) बारिश होने पर
   - उत्तर: (ग) सूर्योदय होने पर
8. 'नील जल में झिलमिलाती देह' किसका प्रतीक है?
   - (क) किसी सुंदरी का

- (ख) उगते हुए सूरज की किरणों का
- (ग) चाँदनी का
- (घ) बादलों का
- उत्तर: (ख) उगते हुए सूरज की किरणों का

9. शमशेर बहादुर सिंह को किस प्रकार का कवि माना जाता है?
    - (क) छायावादी
    - (ख) बिंबधर्मी
    - (ग) रूढ़िवादी
    - (घ) दरबारी
    - उत्तर: (ख) बिंबधर्मी (Imagery oriented)
10. कविता में 'नील जल' किसका प्रतीक है?
    - (क) नदी का
    - (ख) तालाब का
    - (ग) स्वच्छ नीले आकाश का
    - (घ) समुद्र का
    - उत्तर: (ग) स्वच्छ नीले आकाश का

भाग 2: एक पंक्ति वाले प्रश्न (One Line Q&A)

1. 'उषा' कविता में किस समय का वर्णन किया गया है?
    - उत्तर: इसमें सूर्योदय से ठीक पहले के पल-पल बदलते प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन किया गया है।
2. भोर के नभ के लिए कवि ने कौन सा पहला उपमान दिया है?
    - उत्तर: कवि ने भोर के नभ को 'बहुत नीला शंख' जैसा बताया है।
3. कवि ने राख से लीपे हुए चौके को कैसा बताया है?
    - उत्तर: कवि ने इसे अभी 'गीला' बताया है, जो ताजगी और नमी को दर्शाता है।

4. काली सिल और लाल केसर का बिंब क्या स्पष्ट करता है?
    - उत्तर: यह अंधेरे के बीच से फूटती सूरज की हल्की लालिमा को स्पष्ट करता है।
5. 'लाल खड़िया चॉक' मलने का क्या अर्थ है?
    - उत्तर: इसका अर्थ है कि काले आकाश (स्लेट) पर सूरज की लाल किरणें बिखर रही हैं।
6. उषा कविता में कौन सा परिवेश चित्रित है?
    - उत्तर: इसमें ग्रामीण परिवेश का गतिशील और जीवंत चित्र खींचा गया है।
7. कवि खुद को किन दो भाषाओं का 'दोआब' मानते हैं?
    - उत्तर: कवि शमशेर बहादुर सिंह खुद को 'उर्दू और हिंदी' का दोआब मानते हैं।
8. सूर्योदय होने पर क्या समाप्त हो जाता है?
    - उत्तर: सूर्योदय होने पर भोर के आकाश का जादुई सौंदर्य और रहस्य समाप्त हो जाता है।
9. 'गौर झिलमिल देह' का रंग कैसा है?
    - उत्तर: इसका रंग गोरा (श्वेत-स्वर्ण) है, जो सूरज की सुनहरी किरणों को दर्शाता है।
10. शमशेर बहादुर सिंह की बिंबधर्मिता क्या करती है?
    - उत्तर: उनकी बिंबधर्मिता शब्दों से रंग, रेखा और कूची की अद्भुत चित्रकारी करती है।

भाग 3: तीन पंक्ति वाले प्रश्न (Three Line Q&A)

1. 'नीला शंख' उपमान के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?
    - उत्तर: नीला शंख पवित्रता और गहराई का प्रतीक है। सुबह का आकाश गहरा नीला और अत्यंत स्वच्छ दिखाई देता है, इसलिए कवि ने इसकी तुलना शंख से की है ताकि आकाश की निर्मलता और शांति को दर्शाया जा सके।

2. "राख से लीपा हुआ चौका / (अभी गीला पड़ा है)" - कोष्ठक वाली पंक्ति का महत्व क्या है?

   - उत्तर: कोष्ठक में लिखी यह पंक्ति 'गीलेपन' के माध्यम से सुबह की नमी और ताजगी को स्पष्ट करती है। यह पाठक को यह महसूस कराती है कि प्रकृति अभी पूरी तरह जागृत और सक्रिय हो रही है।

3. कवि ने सूरज की किरणों के लिए 'गौर झिलमिल देह' का प्रयोग क्यों किया है?

   - उत्तर: सूर्योदय के समय नीले आकाश में जब सूरज की पहली किरणें पड़ती हैं, तो वे पानी की सतह पर नाचती हुई किसी गोरी देह जैसी झिलमिलाती प्रतीत होती हैं। यह किरणों की कोमलता और चमक को दर्शाता है।

4. 'उषा' का जादू क्या है और यह कब टूटता है?

   - उत्तर: उषा का जादू वह पल-पल बदलता रंगीन सौंदर्य है जो सूर्योदय से पहले दिखता है (कभी नीला, कभी स्लेटी, कभी लाल)। जैसे ही सूर्य पूरी तरह उदय होता है, यह रंगीन खेल खत्म हो जाता है और तेज धूप फैल जाती है, जिसे जादू का टूटना कहा गया है।

5. कविता में 'सिल' और 'स्लेट' के माध्यम से कवि ने क्या चित्र खींचा है?

   - उत्तर: 'सिल' और 'स्लेट' ग्रामीण घर की वस्तुएं हैं। कवि ने काले आकाश को सिल और स्लेट माना है जिस पर सूरज की लालिमा (केसर या चॉक) धीरे-धीरे फैल रही है। यह अंधेरे और उजाले के मिलन का चित्र है।

6. शमशेर बहादुर सिंह को 'सचेत इंद्रियों का कवि' क्यों कहा गया है?

   - उत्तर: क्योंकि वे प्रकृति के सूक्ष्म परिवर्तनों को न केवल देखते हैं, बल्कि अपनी कविताओं में रंगों, ध्वनियों और स्पर्श (जैसे गीला चौका) के माध्यम से पाठक को उसे अनुभव करने का अवसर देते हैं।

7. प्रयोगवादी कविता की क्या विशेषताएं 'उषा' में दिखाई देती हैं?

   - उत्तर: इस कविता में नए बिंब (सिल, स्लेट, चौका) और नए उपमानों का प्रयोग हुआ है। पुराने प्रतीकों के बजाय ग्रामीण जीवन की आम चीजों को कविता का हिस्सा बनाया गया है, जो प्रयोगवाद की पहचान है।

8. 'नील जल' का प्रयोग कवि ने किस संदर्भ में किया है?

- उत्तर: सूर्योदय के समय आकाश गहरा नीला होता है जो किसी स्वच्छ जल के तालाब जैसा लगता है। जब सूरज की किरणें उसमें पड़ती हैं, तो ऐसा लगता है जैसे नीले जल में कोई गोरा शरीर झिलमिला रहा हो।

9. कवि 'भोर की आसमानी गति को धरती की हलचल से' कैसे जोड़ता है?
   - उत्तर: कवि आकाश की सुंदरता को केवल दूर से नहीं देखता, बल्कि उसे गाँव की सुबह (चौका लीपना, सिल पर मसाला पीसना, बच्चों का स्लेट पर लिखना) से जोड़कर उसे एक जीवंत परिवेश बना देता है।

10. "बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से / कि जैसे धुल गई हो" - इसका भाव स्पष्ट करें।
    - उत्तर: इसका भाव यह है कि रात का अंधेरा अब छंटने लगा है। जैसे काली सिल को लाल केसर से धो दिया जाए, वैसे ही काले आकाश में सूरज की लालिमा घुल गई है, जिससे अंधेरा रंगीन हो गया है।

भाग 4: पाँच से छह पंक्ति वाले प्रश्न (Long Q&A)

1. 'उषा' कविता गाँव की सुबह का एक 'गतिशील शब्दचित्र' है। कैसे? विस्तार से समझाइए।
   - उत्तर: कवि ने इस कविता में चित्रों की एक श्रृंखला पेश की है जो स्थिर नहीं हैं, बल्कि निरंतर बदल रहे हैं। शुरुआत में आकाश 'नीला शंख' है, फिर वह 'राख से लीपा चौका' बनता है, फिर 'काली सिल' और अंत में 'स्लेट' जिस पर लाल चॉक मली गई है। ये सभी चित्र ग्रामीण जीवन की सक्रियता को दर्शाते हैं। जैसे-जैसे सूरज ऊपर आता है, ये चित्र बदलते जाते हैं। इसमें रंग है (नीला, काला, लाल), गति है (लिपना, मलना, हिलना) और भविष्य की आशा है। इसलिए इसे एक जीवंत और गतिशील शब्दचित्र कहा जाता है।

2. कविता में प्रयुक्त बिंबों (Images) का वर्णन कीजिए और बताइए कि वे पाठक पर क्या प्रभाव डालते हैं?
   - उत्तर: कवि ने 'नीला शंख', 'राख से लीपा चौका', 'काली सिल', 'लाल केसर' और 'स्लेट' जैसे घरेलू और ग्रामीण बिंबों का प्रयोग किया है। ये बिंब पाठक की कल्पना में सुबह के दृश्य को सजीव कर देते हैं। 'गीला चौका' ताजगी का एहसास कराता है, जबकि 'सिल और केसर' रंगीन चमक पैदा करते हैं। ये बिंब

कविता को केवल पढ़ने की वस्तु नहीं रहने देते, बल्कि देखने और महसूस करने का अनुभव बना देते हैं। पाठक खुद को गाँव की एक शांत और पवित्र सुबह के बीच महसूस करने लगता है।

3. उषा का 'जादू' टूटने से कवि का क्या तात्पर्य है? सूर्योदय के समय प्रकृति में क्या होता है?
   - उत्तर: उषा का जादू वह अद्भुत दृश्य है जहाँ प्रकृति पल-पल अपना रंग बदलती है। कभी गहरा नीलापन, कभी स्लेटी राख जैसा रंग और फिर केसरिया आभा। यह सौंदर्य रहस्यमयी और जादुई लगता है। लेकिन जैसे ही सूर्य उदय होता है, यह सारा जादुई वातावरण खत्म हो जाता है और स्पष्ट श्वेत प्रकाश (धूप) फैल जाता है। रहस्य समाप्त हो जाता है और दिन की सामान्य दिनचर्या शुरू हो जाती है। इसी प्रक्रिया को कवि ने 'जादू का टूटना' कहा है, जो सूर्योदय की पूर्णता का प्रतीक है।
4. शमशेर बहादुर सिंह की कविता में 'साहित्य, चित्रकला और संगीत' का संगम कैसे मिलता है?
   - उत्तर: शमशेर जी एक चित्रकार मन के कवि हैं। उनकी कविता में 'नीला', 'काला', 'लाल' रंगों का प्रयोग चित्रकारी जैसा है। शब्दों का चयन और उनकी लय संगीत पैदा करती है। वे केवल शब्दों से बात नहीं करते, बल्कि एक पूरा कैनवास तैयार करते हैं जहाँ पाठक रंगों की चमक और सुबह की खामोश ध्वनि को महसूस कर सकता है। उनकी बिंबधर्मिता शब्दों के माध्यम से एक दृश्य अनुभव प्रदान करती है, जो कलाओं के बीच की दूरी को पाट देती है।
5. "नील जल में या किसी की / गौर झिलमिल देह / जैसे हिल रही हो" - इन पंक्तियों का आशय और सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।
   - उत्तर: इन पंक्तियों में कवि ने सूर्योदय के समय की कोमल किरणों का मानवीकरण किया है। गहरा नीला आकाश किसी झील या तालाब के जल की तरह शांत है। उसमें उगते हुए सूरज की सुनहरी आभा ऐसी लगती है मानो कोई गोरी सुंदरी उस जल में स्नान कर रही हो और उसका शरीर जल की लहरों के साथ झिलमिला रहा हो। यहाँ प्रकाश और नीलेपन का बहुत ही सुंदर मिश्रण किया गया है, जो सुबह की पवित्रता और चंचलता को प्रकट करता है।

6. **कविता 'उषा' में 'राख से लीपा हुआ चौका' उपमान के माध्यम से कौन से मानवीय और सामाजिक मूल्य प्रकट होते हैं?**
   - **उत्तर: यह उपमान भारतीय ग्रामीण संस्कृति की पवित्रता और सादगी को दर्शाता है। चौका लीपना एक नई शुरुआत और शुद्धि का प्रतीक है। यह मेहनतकश समाज और गृहणियों की सुबह की सक्रियता को भी प्रकट करता है। जिस प्रकार चौका लीपने के बाद घर पवित्र हो जाता है, उसी प्रकार भोर की बेला में पूरी प्रकृति पवित्र और स्वच्छ दिखाई देती है। यह प्रकृति और मनुष्य के अटूट संबंध तथा सादा जीवन उच्च विचार की भावना को भी पुष्ट करता है।**

7. **नयी कविता में कोष्ठकों का प्रयोग किस प्रकार अर्थ विस्तार करता है? 'उषा' के उदाहरण से समझाएं।**
   - **उत्तर: नयी कविता में कोष्ठक (brackets) केवल अतिरिक्त जानकारी नहीं देते, बल्कि दृश्य को अधिक सजीव और सूक्ष्म बनाते हैं। 'उषा' में *(अभी गीला पड़ा है)* कोष्ठक का प्रयोग पाठक को उस समय की नमी और ताजगी का भौतिक अनुभव (Sensory experience) कराता है। यह बताता है कि कार्य अभी-अभी हुआ है और प्रकृति में अभी ओस की नमी बरकरार है। यह छोटे से संकेत के माध्यम से कविता में गहराई और यथार्थवाद (Realism) पैदा करता है।**

8. **उषा कविता में 'काली सिल' और 'लाल केसर' का विरोधाभास क्या दर्शाता है?**
   - **उत्तर: यहाँ 'काली सिल' रात के अवशेष अंधेरे का प्रतीक है और 'लाल केसर' सूरज की पहली किरणों की लालिमा का। जब अंधेरे और उजाले का मिलन होता है, तो वह दृश्य अत्यंत मनोहारी होता है। जैसे काली सिल पर केसर घिसने से वह रंगीन हो जाती है, वैसे ही सुबह का आसमान केसरिया रंग से धुल जाता है। यह विरोधाभास जीवन की आशा को दर्शाता है कि हर अंधेरी रात के बाद एक चमकदार और रंगीन सवेरा अवश्य आता है।**

9. **'उषा' कविता का मुख्य उद्देश्य या संदेश क्या है?**
   - **उत्तर: इस कविता का मुख्य उद्देश्य प्रकृति के साथ मनुष्य के संबंध को उजागर करना और प्रकृति की क्षणिक सुंदरता को शब्दों में बांधना है। यह संदेश देती है कि प्रकृति में होने वाला हर सूक्ष्म परिवर्तन महत्वपूर्ण और सुंदर है। यह कविता हमें अपनी जड़ों (गाँव, मिट्टी, घर) की ओर लौटने और वहां**

की सादगी में सौंदर्य तलाशने की प्रेरणा देती है। यह हमें यह भी सिखाती है कि भविष्य की 'उजास' हर प्रकार की कालिमा को चीरकर आने का दम रखती है।

10. कविता के अंत में "और... सूर्योदय हो रहा है" कहने के पीछे क्या दार्शनिक भाव हो सकता है?

- **उत्तर: यह पंक्ति कविता का निष्कर्ष है जो पूर्ण जागृति को दर्शाती है। 'और...' शब्द एक निरंतरता का प्रतीक है, जो बताता है कि भोर की सारी प्रक्रिया सूर्योदय में विलीन हो गई है। दार्शनिक रूप से यह अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने (तमसो मा ज्योतिर्गमय) की यात्रा है। यह संघर्ष के बाद मिलने वाली सफलता और एक नए युग या नए दिन के प्रारंभ का संकेत है, जहाँ सारा जादू हकीकत में बदल जाता है और जीवन अपनी पूरी शक्ति के साथ प्रकाशित हो उठता है।**

सोलंकी सर